ओ३म्

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

CamScanner से स्कैन किया गया

॥ ओ३म् ॥

श्रीसत्यनारायणव्रतकथा

वैदिक पुस्तकालय ... आचार्य ...

लेखक
परमहंस परिव्राजकाचार्य
स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
एम. ए.

प्रकाशक
भगवती प्रकाशन
माडल टाउन, दिल्ली-११०००९

CamScanner से स्कैन किया गया

पूर्व-पीठिका

सत्यनारायणव्रत-कथा पौराणिक गल्पशास्त्र का का श्रेष्ठ नमूना है। यह कथा ऐतिहासिक नहीं अपितु कवि-कल्पना है। कवि किसी तथ्य को मन और मस्तिष्क में बैठाने के लिए कोई केन्द्रबिन्दु निर्धारित करता है फिर अपनी कल्पना की तूलिका से उसमें रहस्य, रोमांच और औत्सुक्य का समावेश करता है। कहानी में तथ्य तो होता है परन्तु नाम, स्थान आदि प्रायः कल्पित ही होते हैं। कभी-कभी ये नाम एवं स्थान सत्य और ऐतिहासिक भी होते हैं परन्तु कहानी कल्पित ही होती है।

सत्यनारायणव्रत-कथा अपने ढंग की एक अनूठी कथा है। वैदिक धर्म में मानव-समाज को चार भागों में विभाजित किया गया है—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन सभी वर्णों में सत्य का व्यवहार होना चाहिए। इस कथा में चारों वर्णों का एक-एक प्रतिनिधि लेकर कथानक की रचना की गई है।

यह कथा सभी वर्णों को सत्य पर दृढ़ रहने का उपदेश एवं सन्देश देती है। हम अपने जीवन में सत्य को अपनाएँ। आओ, हम प्रभु से प्रार्थना करें।

असतो मा सद् गमय। शत० १४।४।१।३०

प्रभो! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चल।

यह पुस्तक लगभग दो वर्ष पूर्व लिखी गई थी। जुलाई में इसकी प्रेस कापी बनाकर श्री ईश्वरीप्रसाद जी 'प्रेम' की सेवा में भेजी गई। वहाँ यह छप तो न सकी, हाँ, इस कथा के कुछ उत्तम-उत्तम स्थलों को श्री 'प्रेम' जी ने शब्दशः अपनी पुस्तक में नकल कर दिया है। इसी से पाठक पुस्तक के गौरव और महत्त्व का अनुमान लगा सकते हैं।

अब यह पुस्तक भगवती-प्रकाशन से छप रही है। प्रचार की दृष्टि से पुस्तक का मूल्य लागत मात्र रखा गया है।

पुस्तक के अध्ययन से यदि कुछ भी व्यक्तियों को सत्य की प्रेरणा मिली और उन्होंने सत्यनारायण कथा के वास्तविक रहस्य को समझा तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा।

—जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वेद-सदन—माडल टाउन, दिल्ली-९

CamScanner से स्कैन किया गया

॥ ओ३म् ॥

श्रीसत्यनारायणव्रत-कथा

अवतरणिका

व्यास उवाच

एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः।
पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु॥ १॥

व्यासजी बोले—एक समय नैमिषारण्य[1] में शौनक आदि ऋषियों ने पौराणिक[2] सूत[3] से पूछा—

---

१. लखनऊ और सीतापुर के बीच में एक स्थान है नीमसार। यही प्राचीन काल में नैमिषारण्य कहलाता था। यहाँ एक बहुत बड़ा तालाब है। पहले यह यज्ञकुण्ड रहा होगा। इसमें घी की धाराएँ पड़ती थीं। यहाँ पर दीर्घसत्र यज्ञ होते थे, कथा-वार्त्ताएँ होती रहती थीं। कभी-कभी अनेक ऋषि इकट्ठे होते थे और ज्ञान-गोष्ठियाँ होती थीं। महर्षि शौनक यहाँ के कुलपति थे।

२. **'पुराणं वेत्तीति पौराणिकः'**। पौराणिक वे लोग कहलाते थे जिन्हें इतिहास कण्ठस्थ होता था।

३. सूत मनुष्यों के उस वर्ग को कहा जाता था जिन्हें आदि सृष्टि से लेकर वर्तमान समय तक का पूरा इतिहास कण्ठस्थ होता था। अब भी ऐसे कुछ लोग पाये जाते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

ऋषय ऊचुः

व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वांछितं फलम् ।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने ॥ २ ॥

ऋषियों ने पूछा—महामुने ! व्रत अथवा तप करके जैसे भी मनुष्य का कल्याण हो और उसे मनोवांछित फल की प्राप्ति हो, वह कृपा करके कहिए, ऐसी हम सब लोगों की इच्छा है ।

सूत उवाच

एकदा नारदो योगी परानुग्रह कांक्षया ।
पर्यटन् विविधान् लोकान् मृत्युलोकमुपागतः ॥ ३ ॥

सूतजी ने कहा—"हे ऋषियो ! आप लोगों ने मुझसे जो प्रश्न पूछा है, यही प्रश्न एक बार नारद मुनि ने श्रीविष्णु जी से पूछा था, वह इतिहास इस प्रकार है"—एक बार योगिराज नारद परोपकार की इच्छा से नाना लोकों में भ्रमण करते हुए मृत्युलोक में आये ।

ततो दृष्ट्वा जनान् सर्वान् नाना-क्लेशसमन्वितान् ।
नाना-योनि-समुत्पन्नान् क्लिश्यमानान् स्वकर्मभिः ॥ ४ ॥

मृत्युलोक में नारदजी ने देखा कि सभी मनुष्य अनेक प्रकार के दुःखों से पीड़ित हैं और नाना योनियों में जन्म लेकर अपने पापकर्मों का फल भोग रहे हैं ।

केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम् ।
इति संचिन्त्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा ॥ ५ ॥

CamScanner से स्कैन किया गया

उन प्राणियों को दुःखों से पीड़ित देखकर नारदजी अपने मन में सोचने लगे कि इनका दुःख किस प्रकार दूर हो सकता है। यही विचार करते हुए वे विष्णुलोक में गये और वहाँ जाकर विष्णुजी से पूछा—

नारद उवाच

मर्त्यलोके जनाः सर्वे नाना-क्लेशसमन्विताः ।
नानायोनिसमुत्पन्ना पच्यन्ते पापकर्मभिः ॥
तत्कथं शमयेन्नाथ ! लघूपायेन तद् वद ॥ ६ ॥

नारद ने पूछा—भगवन् ! मर्त्यलोक में सभी मनुष्य अनेक प्रकार के क्लेशों से युक्त और नाना प्रकार की योनियों में जन्म लेकर पापकर्म में लीन हैं। नाथ ! आप कोई ऐसा सरल और छोटा-सा उपाय बताइए जिससे उन प्राणियों के दुःख दूर हों।

श्रीविष्णुरुवाच

साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रहकांक्षया ।
यत्कृत्वा मुच्यते मोहात्तच्छृणुष्व वदामि ते ॥ ७ ॥

श्रीविष्णुजी ने कहा—नारद ! संसार के कल्याण की कामना से तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। वत्स ! जिस कर्म को करके प्राणी मोह से छूट जाता है, मैं वह उपाय बताता हूँ, तुम ध्यान-पूर्वक सुनो।

व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम् ।
तव स्नेहान्मया विप्र प्रकाशः क्रियतेऽधुना ॥ ८ ॥

CamScanner से स्कैन किया गया

एक महापुण्य प्रदान करनेवाला व्रत है जो पृथिवी और स्वर्ग में दुर्लभ है। हे नारद! तुम्हारे प्रति स्नेह होने के कारण मैं उसका वर्णन करता हूँ।

सत्यनारायणस्यैव व्रतं सम्यग्विधानतः।
कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

वह व्रत है—विधि-विधानपूर्वक सत्यनारायण का व्रत और उसकी उपासना। इस व्रत के अनुष्ठान से मनुष्य दुःखों से छूटकर इस लोक में सुख और मरने पर मोक्ष प्राप्त करता है।

नारद उवाच

किं फलं किं विधानं च कृतं केनैव तद् व्रतम्।
तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं व्रतं प्रभो ॥ १० ॥

नारद ने पूछा—प्रभो! इस व्रत का १. फल क्या है? २. इस व्रत का विधान क्या है? ३. पहले किस-किसने इस व्रत का अनुष्ठान किया है? और ४. यह व्रत कब करना चाहिए? ये सभी बातें विस्तारपूर्वक बताइए।

श्रीविष्णुरुवाच

दुःखशोकादिशमनं धनधान्यप्रवर्द्धनम्।
सौभाग्यसन्ततिकरं सर्वत्र विजयप्रदम् ॥ ११ ॥

विष्णुजी ने कहा—हे नारद! इस व्रत का फल सुनो! यह व्रत समस्त दुःखों और शोकों को नष्ट करनेवाला है। यह व्रत सौभाग्य और सन्तति देने वाला तथा सर्वत्र विजय प्राप्त कराने वाला है।

CamScanner से स्कैन किया गया

दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भीतो भयात् प्रमुच्येत सत्यमेव न संशयः ॥ १२ ॥

इस व्रत के अनुष्ठान से दरिद्र धनवान् हो जाता है, बन्धनों में पड़ा हुआ व्यक्ति मुक्त हो जाता है। भयभीत मनुष्य भय से छूट जाता है, यह सत्य है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

नारदजी का दूसरा प्रश्न था—**किं विधानम् ?** इस व्रत के करने का विधान क्या है ? बाज़ार में उपलब्ध 'सत्यनारायणव्रत-कथा' पुस्तकों में इस प्रश्न का उत्तर नहीं है। सभी श्रोताओं के मन में एक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि वह कौन-सी कथा थी जिसे सदानन्द ब्राह्मण, लकड़हारे, लीलावती-कलावती और राजा तुंगध्वज ने सुना था। कथावाचक पण्डितजी कथा का माहात्म्य सुनाकर मौन हो जाते हैं और श्रोता संशय के हिंडोले में झूलता रहता है। जिस कथा को सुनकर इन सभी का कल्याण हुआ था, हम वही प्राचीन कथा यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्राचीनकाल में महर्षि धौम्य नगरों के कोलाहल से दूर एकान्त शान्त वन में कुटी बनाकर रहते थे। चारों ओर प्रकृति की निराली छटा मन को मोहित करती थी। ऊँचे-ऊँचे पर्वत ऐसे प्रतीत होते थे मानो उपासना में तल्लीन हों। कल-कल, छल-छल करती हुई नदियों और झरनों का निनाद वहाँ प्रभु के गीत गाता हुआ-सा प्रतीत होता था। आश्रम के आस-पास विचरनेवाले पशु और पक्षी उस आश्रम के सौन्दर्य को और अधिक आकर्षक बनाते थे। एक दिन कुछ जिज्ञासु समित्पाणि—हाथ में समिधाएँ लेकर महर्षि धौम्य की सेवा में उपस्थित हुए और उनसे प्रार्थना की—भगवन् ! हम सत्यनारायणव्रत के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासा लेकर उपस्थित हुए हैं। कृपा कर हमारी जिज्ञासा का समाधान कीजिए।

CamScanner से स्कैन किया गया

महर्षि धौम्य बोले—परमात्मा के गुण-कर्म और स्वभाव अनन्त हैं। उसके गुण-कर्म और स्वभावों के अनुसार उस परमात्मा के नाम भी अनन्त हैं। वह परमात्मा सबसे बड़ा है अतः उसे 'ब्रह्म' कहते हैं, वह सर्वव्यापक है अतः उसे 'विष्णु' कहते हैं, वह सबका कल्याण करता है इसलिए उसे 'शिव' कहते हैं। इसी प्रकार उस परमात्मा का एक नाम 'सत्यनारायण' भी है। उस परमात्मा को नारायण क्यों कहते हैं, इस विषय में महर्षि मनु लिखते हैं—

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः॥ —मनु० १। १०

जल और जीव—इन दोनों का नाम 'नारा' है। परमात्मा जल की छोटी-सी बूँद में भी विद्यमान है और सब जीवों के हृदय-मन्दिर में भी व्यापक है, इसलिए परमात्मा का नाम 'नारायण' है।

वह परमात्मा तीनों कालों में विद्यमान रहता है, उसका कभी नाश नहीं होता, अतः सदा अखण्ड, एकरस विद्यमान और सब जीवों के हृदय-मन्दिर में निवास करने के कारण परमात्मा का नाम 'सत्यनारायण' है।

एक शिष्य ने पूछा—महर्षे! युक्ति और प्रमाणों से सिद्ध कीजिए कि परमेश्वर है।

महर्षि धौम्य ने कहा—सारे वेद, दर्शन और उपनिषद् उस प्रभु की सत्ता का वर्णन कर रहे हैं। ऋग्वेद में कहा है—

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति॥ ऋ० १। १६४। ३९

जो मनुष्य उस परमात्मा को नहीं जानता, उसे वेद पढ़ने का भी क्या लाभ? वेद का ज्ञान, वेद का पठन-पाठन इसीलिए किया जाता है कि मनुष्य वेद में वर्णित परमात्मा को जाने, उसका ज्ञान प्राप्त करे।

CamScanner से स्कैन किया गया

जब मनुष्य अविद्या और अन्धकार में भटक कर निराश हो जाता है, जिस समय मनुष्य यह कहता है कि परमात्मा कहीं नहीं है, उस समय परमात्मा मानो उसके हृदय में झाँककर कहता है—

अयमस्मि जरितः पश्य मेह ॥ ऋ० ८ । १०० । ४

हे भक्त ! मैं कहता हूँ, इधर देख । अणु-अणु और कण-कण में प्रभु की छटा दिखाई देती है, सर्वत्र उसका सौन्दर्य बिखरा हुआ है । प्रभु सर्वत्र व्यापक है, हमारी ही आँख फूटी हुई है, अतः हम उसे देख नहीं पाते ।

वेद पुकार-पुकार कर कहते हैं, उस प्रभु को जानो—

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥

—यजु० ३१ । १८

मैं उस प्रभु को जानूँ जो सबसे महान् है, जो करोड़ों सूर्यों के समान देदीप्यमान है, जिसमें अविद्या और अन्धकार का लेश भी नहीं है । उसी परमात्मा को जानकर मनुष्य दुःखों से, संसाररूपी मृत्यु-सागर से पार उतरता है, मोक्ष-प्राप्ति का और कोई उपाय नहीं है ।

महर्षि पतंजलि ने उस प्रभु का वर्णन करते हुए कहा है—

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः ॥ —योगदर्शन १ । २४

अविद्यादि पाँच क्लेश, शुभ और अशुभ कर्म, कर्मों के फल और वासनाओं से जो पृथक है—ऐसा अनुपम पुरुष ईश्वर है ।

स एषः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् ॥ —योगदर्शन १ । २६

CamScanner से स्कैन किया गया

वह परमात्मा पूर्व ऋषियों का भी गुरु है, वह ऐसा अद्भुत गुरु है जो कभी काल के गाल में नहीं जाता। वह काल का भी काल है।

संसार का पत्ता-पत्ता परमात्मा का पता दे रहा है। एक घड़े को बनाने के लिए कुम्भकार—कुम्हार की आवश्यकता सभी अनुभव करते हैं तो क्या इतनी बड़ी पृथिवी किसीके बनाये बिना अपने आप बन गई ? एक दीपक को जलाने के लिए किसी जलानेवाले का होना सभी स्वीकार करते हैं तो क्या सूर्य-चन्द्रमा जैसे अरबों-खरबों दीपक बिना किसीके जलाये स्वयमेव जल गये ? सर्वथा असम्भव। संसार में सर्वत्र नियम और व्यवस्था है। यह नियम और व्यवस्था यह सिद्ध करती है कि इस संसार का कोई नियामक और व्यवस्थापक है। इस संसार को देखकर परमात्मा का भी प्रत्यक्ष होता है।[1]

अनुमान से भी परमात्मा का ज्ञान होता है। कैसे ? इस विषय में एक सुन्दर दृष्टान्त है।

---

१. आधुनिक युग के महान् दार्शनिक महर्षि दयानन्द सरस्वती परमात्मा की सिद्धि में लिखते हैं—

"देखो ! शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखा कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप मूलरचन, लोम, नख आदि का स्थापन, आँख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला-कौशल स्थापन आदि अद्भुत सृष्टि को परमेश्वर के बिना कौन कर सकता है ?"

—सत्यार्थप्रकाश, अष्टम समुल्लास

CamScanner से स्कैन किया गया

एक व्यक्ति का ऊँट खो गया। वह व्यक्ति अपने ऊँट को खोज रहा था। मार्ग में उसे कुछ पथिक दिखाई दिये। उस व्यक्ति ने उन यात्रियों से पूछा—"क्या आपने इधर कोई ऊँट जाता देखा है?" एक यात्री बोला—"क्या तुम्हारा ऊँट एक आँख से काना था?" वह व्यक्ति बोला—"बिल्कुल ठीक। मेरा ऊँट एक आँख से काना था।" दूसरे यात्री ने कहा—"क्या आपके ऊँट पर शीरा लदा हुआ था?" ऊँटवाले ने कहा—"हाँ, हाँ, उसपर शीरा लदा था, जल्दी बताओ वह किधर गया है?" तीसरा यात्री बोला—"उसपर एक गर्भवती स्त्री बैठी हुई थी?" ऊँट वाला बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"आप जो निशानियाँ बता रहे हैं, वे सभी ठीक हैं, अब आप जल्दी बताओ कि वह ऊँट कहाँ है?" यात्रियों नें कहा—"भाई! हमें पता नहीं तेरा ऊँट कहाँ है, हमने उसे देखा ही नहीं।" ऊँट-वाला बहुत क्रुद्ध हुआ और उसनें उन यात्रियों को न्यायाधीश के सामने प्रस्तुत कर सारी बात सुना दी। न्यायाधीश के पूछने पर भी उन पथिकों ने वही बात कही कि हमने इसका ऊँट कहीं नहीं देखा। हमने जो कुछ बताया वह अनुमान के आधार पर था। पहले पथिक ने कहा—"सड़क के दोनों ओर वृक्ष लगे हुए थे। दाहिनी ओर के वृक्ष अधिक हरे-भरे थे और बाईं ओर के कम। उस ऊँट ने बाईं ओर के वृक्ष जो कम हरे-भरे थे, उन्हें ही खाया था, इसीसे मैंने अनुमान लगाया कि ऊँट एक आँख से काना था।" दूसरे यात्री ने कहा—"एक स्थान पर उस ऊँट को बैठाया गया था, वहाँ इधर-उधर शीरे की बूंदें टपकी हुई थीं, उसीसे मैंने यह अनुमान लगाया कि उसपर शीरा लदा था।" तीसरे पथिक ने कहा—"उस ऊँट पर जो स्त्री बैठी हुई थी, वह ऊँट से उतर कर इधर-उधर घूमी थी। उसका एक पैर दूसरे पैर की अपेक्षा भारी पड़ता था, उसीसे मैंने अनुमान लगाया कि वह गर्भवती थी।" तीनों ने कहा—"हमने इसका ऊँट देखा कहीं नहीं, हमने जो-कुछ कहा—वह अनुमान के आधार पर कहा था।"

CamScanner से स्कैन किया गया

ठीक इसी प्रकार सृष्टि में सर्वत्र नियम और व्यवस्था है। दिन और रात, बसन्त के पश्चात् ग्रीष्म आदि ऋतुओं का आना, चन्द्रमा का कलाओं के साथ घटना और बढ़ना, अमावस्या और पौर्णमासी के दिन समुद्र में ज्वारभाटे का उठना, चना से चना और आम से आम का उत्पन्न होना—ये और इस प्रकार की अनन्त व्यवस्थाओं को देखकर सहज में ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि परमात्मा है।

दूसरे जिज्ञासु ने पूछा—"ऋषे! परमात्मा का स्वरूप कैसा है?"

ऋषि बोले—यजुर्वेद ४० । ८ में परमात्मा का स्वरूप बतानेवाला निम्न मन्त्र है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम्।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

वह परमात्मा सर्वव्यापक, शीघ्रकारी, शरीर-रहित, फोड़ा-फुंसी-रहित, नस-नाड़ी के बन्धन से रहित, शुद्ध और पाप से रहित है। वह परमात्मा क्रान्तदर्शी, मन के विचारों को भी जाननेवाला, सबका अधिष्ठाता और स्वयम्भू है। वह शाश्वती प्रजाओं के लिए वेद-प्रदाता और सृष्टि का याथातथ्य, ठीक-ठीक निर्माण करनेवाला है।

परमात्मा कहाँ रहता है, किधर देखता है और क्या करता है? इस विषय में एक मनोरंजक और शिक्षापूर्ण दृष्टान्त भी है।

एक राजा ने अपने विदूषक से पूछा—"ईश्वर कहाँ रहता है, किधर देखता है और क्या करता है?" विदूषक चकराया कि क्या उत्तर दे। जब उसे कोई उत्तर नहीं सूझा तब उसने कहा—"महाराज! मुझे एक सप्ताह का समय दीजिए तब मैं आपके प्रश्न का उत्तर दूंगा।" एक सप्ताह का समय मिल गया। विदूषक उत्तर सोच रहा है परन्तु कुछ सूझता नहीं। विदूषक के यहाँ एक

CamScanner से स्कैन किया गया

नौकर भी रहता था जिसका नाम था पाजी। विदूषक को चिन्तित देखकर एक दिन पाजी ने पूछा—"मालिक ! आप बहुत चिन्तित रहते हैं, क्या कारण है ?" विदूषक ने कारण बताया तो पाजी ने कहा—"आप मुझे राजा के यहाँ ले चलें, मैं उत्तर दे दूंगा।" अवधि की समाप्ति पर पाजी को दरबार में उपस्थित कर विदूषक ने कहा—"राजन् ! आपके प्रश्न इतने सरल हैं कि इनका उत्तर मेरा यह नौकर पाजी भी दे सकता है।" महाराज ने पाजी से पूछा—"बताओ ईश्वर कहाँ रहता है ?" पाजी ने कहा—"राजन् ! पहले अतिथि का आदर-सत्कार किया जाता है, उसे कुछ खिलाया-पिलाया जाता है, फिर उससे कुछ पूछा जाता है। आपने तो बिना आतिथ्य किये ही प्रश्न पूछना आरम्भ कर दिया।" महाराज कुछ लज्जित हुए और अतिथि के लिए दूध लाने का आदेश दिया। पाजी ने दूध के कटोरे को बायें हाथ में पकड़ा और दाहिने हाथ की तर्जनी अँगुली से दूध को चला-कर और बार-बार अँगुली को दूध से बाहर निकालकर देखने लगा। महाराज ने पूछा—"यह क्या करते हो ?" पाजी बोला—"सुना है कि दूध में मक्खन होता है, मैं ढूँढ रहा हूँ कि इस दूध में मक्खन कहाँ है ?" राजा ने कहा—"दूध में मक्खन होता है, इसकी प्रत्येक बूँद में एक-एक अणु में मक्खन है परन्तु वह ऐसे दिखाई नहीं देता। पहले दूध को गर्म करना पड़ता है, फिर उसमें जामन लगाते हैं, उसका दही जमाने के पश्चात् उसे मथते हैं, तब मक्खन प्राप्त होता है।"

पाजी ने कहा—"महाराज ! यही आपके प्रश्न का उत्तर है। परमात्मा प्रत्येक स्थान पर अणु-अणु और कण-कण में विद्यमान है। उसे पाने के लिए यम-नियमों का अनुष्ठान करना पड़ता है, ध्यान का जामन लगाना पड़ता है फिर 'ओ३म्' की मथानी से उसे मथना पड़ता है। शास्त्रकार कह गये हैं—

CamScanner से स्कैन किया गया

स्वदेहमरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम्।
ध्याननिर्मथनाभ्यासाद्देवं पश्येन्निगूढवत् ॥

—श्वेता० १ । १४

अपने शरीर को नीचे की मथानी बनाकर और ओ३म् के जप को ऊपर की रयि बनाकर ध्यानरूपी रगड़ के निरन्तर अभ्यास (पुनः पुनः ओ३म् के जप की आवृत्ति) से आत्मा में छिपे हुए-से परमदेव परमात्मा का साक्षात्कार करना चाहिए।

राजा ने कहा—"बहुत ठीक ! अब यह बताओ कि परमात्मा किधर देखता है ?'

पाजी ने एक मोमबत्ती जलाकर पूछा—"राजन् ! यह मोमबत्ती किधर देखती है ?" राजा ने कहा—"यह बत्ती किसी एक ओर नहीं देखती, अपितु चारों ओर देखती है। इसका प्रकाश सर्वत्र है।" पाजी ने कहा—"राजन् ! इसी प्रकार ईश्वर भी **विश्वतश्चक्षुः** (यजु० १७ । १९) सर्व-द्रष्टा है। वह सभी प्राणियों के कर्मों को देखता है।"

राजा ने कहा—"मेरा अन्तिम प्रश्न है, ईश्वर क्या करता है ?" पाजी ने पूछा—"राजन् ! यह बताइए कि आप गुरु बनकर पूछ रहे हैं या शिष्य बनकर।" राजा ने कहा—"मैं शिष्य बनकर पूछता हूँ।" पाजी बोला—"वाह महाराज ! आप बहुत अच्छे शिष्य हैं, गुरु तो नीचे जमीन पर खड़ा है और शिष्य सिंहासन पर बैठा है। धन्य है महाराज ! आपको और आपके शिष्टाचार को।"

महाराज फिर लज्जित हुए। वे अपने सिंहासन से नीचे उतरे और पाजी को सिंहासन पर बैठाकर पूछा—"अब बताइए, ईश्वर क्या करता है ?" पाजी ने कहा—"अब क्या बतलाना रह गया। ईश्वर यही करता है कि एक क्षण में नीचेवाले को ऊपर और ऊपरवाले को नीचे कर देता है, राजा को रंक-कंगाल और रंक को राजा बना देता है।"

CamScanner से स्कैन किया गया

तीसरे जिज्ञासु ने पूछा—"ऋषिवर ! कृपया यह बताइए, जब ईश्वर सर्वव्यापक है तब वह दिखाई क्यों नहीं देता, उसके दर्शन क्यों नहीं होते ?"

धौम्य ऋषि ने कहा—आपके प्रश्न का उत्तर यजुर्वेद में दिया हुआ है—

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव ।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप्त उक्थशासश्चरन्ति ।। —यजु० १७ । ३१

हे मनुष्यो ! तुम उस परमात्मा को नहीं जानते जिसने इन सब लोक-लोकान्तरों का, इस विश्वब्रह्माण्ड का निर्माण किया है । वह तुमसे भिन्न है परन्तु तुम्हारे अन्दर ही विद्यमान है । तुम उसे नहीं जानते, इसके चार कारण हैं—१. तुम अविद्या-अज्ञान के कुहरे से ढके हुए हो । मल, विक्षेप और आवरण से तुमने अपने हृदय-मन्दिर को मलिन बनाया हुआ है, अतः तुम्हें परमात्मा की ज्योति के दर्शन नहीं होते । २. तुम जल्पी हो, व्यर्थ की गप-शप में अपना अमूल्य मानव-जीवन बर्बाद करते रहते हो । ३. तुम केवल प्राण-पोषण में लगे रहते हो । खाना-पीना और मौज उड़ाना—बस इसीको तुमने अपने जीवन का अन्तिम उद्देश्य समझा हुआ है । ४. तुम्हारी भक्ति दिखावे की भक्ति है, तुम मुख से स्तोत्र जपते हो, चिल्लाते बहुत हो, तुम्हारे जीवन और आचरण में भक्ति नहीं है, अतः तुम्हें परमात्मा के दर्शन नहीं होते ।

परमात्मा को पाने के लिए ज्ञान की ज्योति जलाओ । **विद्ययामृतमश्नुते** (यजु० ४०।१४) विद्या=यथार्थज्ञान से परमात्मा की प्राप्ति होती है । व्यर्थ की गप-शप में अपना समय नष्ट न करो । आपका आदर्श-वाक्य होना चाहिए—**मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः ।** (ऋ० ८ । ४८ । १४) आलस्य, प्रमाद और बकवास हमारे ऊपर शासन न करे । शरीर का पोषण भी आवश्यक है । शरीर का ध्यान रखो परन्तु शरीर से बढ़कर आत्मा भी है, शरीर की भाँति आत्मा को भी भोजन देना चाहिए ।

CamScanner से स्कैन किया गया

आत्मा को ऊँचा उठाने का सतत प्रयास करना चाहिए और हृदय से भक्ति करनी चाहिए। हमारा सारा जीवन भक्ति और आध्यात्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत होना चाहिए। निरन्तर साधना से, दीर्घकालीन योगाभ्यास से श्रद्धापूर्वक ओ३म् और गायत्री के जाप से जीवन निर्मल, शुद्ध एवं पवित्र होकर प्रभु के दर्शन होंगे और अवश्य होंगे।

चौथे जिज्ञासु ने पूछा—"भगवन्! प्रभु की उपासना कैसे करनी चाहिए?"

ऋषि बोले—"परमात्मा की उपासना कैसे करनी चाहिए, इसका वर्णन 'भावाष्ट-पुष्प विधि' में बहुत ही मनोरम एवं सुन्दर रूप में किया गया है—

अहिंसा प्रथमं पुष्पं पुष्पमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूतदयापुष्पं क्षमापुष्पं विशिष्यते॥
ज्ञानपुष्पं, शौचपुष्पं ध्यानपुष्पं तुसप्तमम्।
सत्यं चैवाष्टमं पुष्पमेभिस्तुष्यति नः शिवः॥

मिट्टी, पत्थर, लक्कड़, लोहा आदि धातुओं की मूर्ति पर गेंदा और गुलाब के पुष्प चढ़ाने से जीवन का कल्याण नहीं हो सकता। पुराण में कहा है—**अधमा प्रतिमापूजा।** मूर्तिपूजा सबसे निकृष्ट है। चाणक्य ने भी लिखा है—**प्रतिमा अल्पबुद्धिनाम्।** (चा० नीति०) मूर्ति-पूजा मूर्खों के लिए है।[1]

---

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है—
"नहीं, नहीं। मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं, किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिरकर (मनुष्य) चकनाचूर हो जाता है। पुनः उस खाई से निकल नहीं सकता, किन्तु उसीमें मर जाता है।" —सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास

१

CamScanner से स्कैन किया गया

परमात्मा निराकार है, अतः उसकी पूजा के पुष्प भी निराकार ही होने चाहिएँ। निराकार परमात्मा पर चढ़ानेवाले पुष्प निम्न हैं—

१. अहिंसा प्रथम पुष्प है। **अहिंसा परमो धर्मः**=अहिंसा परम धर्म है। महर्षि पतंजलि ने अष्टांगयोग में अहिंसा को सर्वप्रथम स्थान दिया है। अहिंसा का अर्थ है—मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी के प्रति वैर की भावना न रखना अपितु सभी प्राणियों के प्रति प्रेम की भावना उत्पन्न करना। हम प्रेम की ऐसी प्रतिमा=मूर्ति बन जाएँ कि वेद के शब्दों में हम यह घोषणा कर सकें कि—**मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।** (यजु० ३६।१८) मैं संसार के सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं।

२. इन्द्रिय-निग्रह दूसरा पुष्प है। इन्द्रिय-निग्रह का अर्थ है—चंचल इन्द्रियों को अपने वश में रखना। महर्षि मनु का सन्देश है—

इन्द्रियाणां प्रसंगेन दोषमृच्छत्यसंशयम्।
संनियम्य तु तान्येव ततः सिद्धिं निच्छति॥ —मनु० २।९३

इन्द्रियों के विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध) में आसक्त होकर मनुष्य निश्चय ही दोष का भागी बनता है, अधोगति को प्राप्त होता है और इन्द्रियों को वश में करके सिद्धि को प्राप्त होता है।

विषयों में फँसकर प्राणी कैसे नष्ट होते हैं, इसका वर्णन गरुड़पुराण में बहुत सुन्दर रीति से दिया गया है—

कुरंग-मातंग-पतंग-भृंग-मीना हता पंचभिरेव पञ्च।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पंचभिरेव पञ्च॥—गरुडपु० ११५।२१

CamScanner से स्कैन किया गया

हिरण कान के विषय शब्द पर मस्त होकर अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है। हाथी स्पर्श विषय के वशीभूत होकर अपने प्राण गँवा देता है। पतंग रूप पर मस्त होकर दीपक पर गिरकर जल मरता है। मछली जिह्वा के स्वाद के प्रलोभन में फँसकर अपना जीवन खो देती है। भौंरा गन्ध गुण पर मुग्ध होकर अपने जीवन को समाप्त कर देता है। ये सभी प्राणी एक-एक विषय के कारण मारे जाते हैं फिर जो मनुष्य अपनी पाँचों इन्द्रियों से पाँचों विषयों का सेवन करता है, वह कैसे बच सकता है?

चंचल इन्द्रियों को वश में करो, जितेन्द्रिय बनो। यही कल्याण का मार्ग है और यही प्रभु को अर्पित करने का सच्चा पुष्प है।

३. भूतदया—प्राणिमात्र के प्रति दया की भावना तीसरा पुष्प है। दूसरे प्राणियों को दुःखी देखकर उनके दुःख को दूर करने के लिए द्रवित हो जाना, दुःखियों के प्रति करुणा की भावना रखना, इससे चित्त निर्मल बनता है।[१]

ऐसी प्रार्थना किया करो—

भक्तिर्देवे मतिर्धर्मे शक्तिस्त्यागे रतिः श्रुतौ।
दया सर्वेषु भूतेषु स्यान्मे जन्मनि जन्मनि॥

प्रत्येक जन्म में मेरी परमात्मा में भक्ति हो, धर्म में मति हो, त्याग=दान देने की शक्ति हो, वेद के प्रति प्रेम हो और सभी प्राणियों के प्रति दया की भावना हो।

---

१. कबीरजी ने भी लिखा है—

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।
जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान॥

CamScanner से स्कैन किया गया

और रन्तीदेव के शब्दों में—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

न तो मैं भूमण्डल का राज्य चाहता हूँ, न मुझे स्वर्ग की कामना है और न मैं मोक्ष ही चाहता हूँ, मैं केवल यह चाहता हूँ कि संसार के सभी प्राणियों के कष्ट दूर हो जाएँ ।

संस्कृत के एक कवि ने कहा है—

क्षान्तितुल्यं तपो नास्ति न सन्तोषान्सुखं परम् ।
नास्ति तृष्णा समं व्याधिर्न च धर्मो दयापरः ॥

शान्ति के समान कोई तप नहीं है, सन्तोष के समान कोई सुख नहीं है, तृष्णा के समान कोई व्याधि=रोग, बीमारी नहीं है और दया के समान कोई धर्म नहीं है ।

४. क्षमा चौथा पुष्प है । **क्षमा वीरस्य भूषणम्** । क्षमा वीरों की शोभा और आभूषण है । क्षमा धर्म का दूसरा लक्षण है । क्षमाशील बनो । क्षमा का पाठ पढ़ो महर्षि दयानन्द से । जगन्नाथ रसोइये ने दूध में कालकूट विष मिलाकर ऋषि को पिला दिया । थोड़ी देर पश्चात् जब ऋषि को ज्ञान हुआ तब उन्होंने जगन्नाथ को बुलाकर पूछा । पापी अपने पाप के कारण काँप गया । ऋषि के चरणों में गिर पड़ा । ऋषि ने कहा—"तेरे इस कुकृत्य के कारण मेरे द्वारा होनेवाला जनहित का कार्य रुक गया । जिस समय लोगों को और महाराज को पता लगेगा तो वे लोग तुझे जीता न छोड़ेंगे । ले, यह पाँच सौ रुपये की थैली है । यहाँ से शीघ्र नेपाल भाग जा और अपने प्राणों की रक्षा कर ।" कैसी अद्‌भुत क्षमा है ! अपने प्राणघातक को भी क्षमा । क्षमा ही नहीं, पाँच सौ रुपये पुरस्कार भी । धन्य है ऋषि ! तुझे शत-शत प्रणाम ।

CamScanner से स्कैन किया गया

५. ज्ञान पाँचवाँ पुष्प है। ज्ञानी बनो। ज्ञान का उपार्जन करो। गीता में श्रीकृष्णजी कहते हैं—

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ॥ —गीता ४। ३८

इस संसार में ज्ञान से बढ़कर और कोई साधन मनुष्य को पवित्र करनेवाला नहीं है।

जीवन में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित कीजिए। सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म, पाप और पुण्य, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का विवेक कीजिए। ज्ञान के सोपान=सीढ़ी पर चढ़कर मनुष्य मुक्ति को प्राप्त करता है।

६. शौच=पवित्रता छठा पुष्प है। शौच दो प्रकार का होता है, एक बाह्य और दूसरा आन्तरिक। बाह्य शौच है जल आदि से शरीर और वस्त्रों की शुद्धि और आन्तरिक शौच है सत्यादि के द्वारा मन आदि की शुद्धि। महर्षि मनु ने कहा है—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ॥ —मनु० ५। १०९

शरीर जल से, मन सत्य से, जीवात्मा ब्रह्मविद्या और तप से तथा बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः ॥ —मनु० ५। १०६

सब शुद्धियों में धन की शुद्धि (ईमानदारी से कमाये गये धन का होना) ही सबसे श्रेष्ठ है। जो धन में शुद्ध है, जिसने अन्याय और अधर्म से किसी का धन नहीं हड़पा है, वही शुद्ध है। जो केवल

CamScanner से स्कैन किया गया

मिट्टी और जल आदि से बाहर की शुद्धि करता है परन्तु अन्याय से धन कमाता है, वह वास्तव में शुद्ध नहीं है।

पवित्रता देवत्व है। अतः आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार की पवित्रता का सम्पादन करो।

७. ध्यान सातवाँ पुष्प है। ध्यान का अर्थ है—मन को तैल-धारावत् एक स्थान पर केन्द्रित करना। शास्त्रकार कह गये हैं—

ध्यानं निर्विषयं मनः। —सांख्य० ६। २५

मन का विषयों से रहित हो जाना ही ध्यान है।

ध्यान की परिपक्व अवस्था का नाम ही समाधि है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान, योग के इन अंगों का अनुष्ठान करते हुए समाधि में पहुँचने का प्रयत्न करो। ध्यान से काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दुर्गुण जलकर भस्म हो जाते हैं।

८. सत्य आठवाँ पुष्प है। सत्य की महिमा महान् है। सत्य की महिमा का वर्णन करते हुए महर्षि व्यास ने कहा है—

नहि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।

सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्।

सत्य स्वर्ग=सुख-प्राप्ति की सीढ़ी है।

त्रीण्येव च सतामाहुः सन्तः पदमनुत्तमम्।
न द्रुह्येच्चैव दद्याच्च सत्यं चैव सदा वदेत्॥

वैदिक पुस्तकालय मुम्बई * आचार्य धर्मधर आर्य *

CamScanner से स्कैन किया गया

महापुरुष तीन ही बातों को सर्वश्रेष्ठ बताते हैं—१. किसी भी प्राणी के प्रति द्रोह=वैर की भावना न रखना २. दान देना और ३. सदा सत्य बोलना।

अहिंसा से आरम्भ करके सत्य तक आठ पुष्प हैं। इन पुष्पों को प्रभु को अर्पित करो। वह शिव=कल्याणकारी प्रभु इस पुष्पपूजा से सन्तुष्ट एवं प्रसन्न होते हैं। इन गुणों को जीवन में धारण करके अपने जीवन को ही पुष्पमय बना लो और फिर प्रभु से प्रार्थना करो—

पुष्पाणि सन्तु तव देव मदिन्द्रियाणि
धूपोऽगरुवपुरिदं हृदयं प्रदीपः।
प्राणा हवींषि करणानि नवाक्षतास्ते
पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतमेष जीवः॥

हे देव! प्रभो! तेरी पूजा के लिए मेरी इन्द्रियाँ पुष्पहार हैं, मेरा शरीर जलती हुई धूप और अगरवत्ती है, हृदयरूपी दीपक है, प्राणरूपी आहुति और कर्मेन्द्रिय रूप नये तण्डुल=चावल हैं। अब मुझ भक्त को पूजा का फल प्राप्त हो, यही याचना और प्रार्थना है।

पांचवें जिज्ञासु ने पूछा—"ऋषे! कृपया व्रत का अर्थ और स्पष्ट कर दीजिए।"

महर्षि धौम्य ने कहा—व्रत का अर्थ प्रभ-प्रदत्त यजुर्वेद में बहुत स्पष्ट रूप में बताया गया है। देखिए—

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि॥ —यजु० १।५

CamScanner से स्कैन किया गया

हे ज्ञानस्वरूप प्रभो ! आप व्रतों के पालक और रक्षक हैं। मैं भी व्रत का अनुष्ठान करूँगा। मुझे ऐसी शक्ति और सामर्थ्य प्रदान कीजिए कि मैं अपने व्रत का पालन कर सकूँ। मेरा व्रत यह है कि मैं असत्य-भाषण को छोड़कर सत्य को जीवन में धारण करता हूँ।

इस मन्त्र के अनुसार व्रत का अर्थ हुआ किसी एक दुर्गुण, बुराई को छोड़कर किसी उत्तम गुण को जीवन में धारण करना।

उपवास का भी ऐसा ही अर्थ है—

उप समीपे यो वासो जीवात्मपरमात्मयोः।
उपवासः स विज्ञेयो न तु कायस्य शोषणम् ॥

—वराहोपनिषद् २। ३९

जीवात्मा का परमात्मा के समीप होना, परमात्मा की उपासना करना, परमात्मा के गुणों को जीवन में धारण करना, इसी का नाम उपवास है। शरीर को सुखाने का नाम उपवास नहीं है।[१]

प्राचीन साहित्य में विद्वानों, सन्तों और ऋषि-महर्षियों ने भूखे मरने रूपी व्रत का खण्डन किया है। प्राचीन ग्रन्थों में न तो 'सन्तोषी' माता के व्रत का वर्णन है और न एकादशी आदि व्रतों का विधान है।

---

१. कबीर साहब ने व्रतों का खण्डन करते हुए कहा है—

राम नाम को छांडि के जो राखे करवा चौथि।
वह तो ह्वै गी सूकरी तिन्हों राम सों कौथि ॥

कबीर जिस राम की उपासना करते थे वह महाराज दशरथ का पुत्र अयोध्यापति राम नहीं था—यह बात भी पाठकों को स्मरण रखनी चाहिए।

CamScanner से स्कैन किया गया

महर्षि मनु ने लिखा है—

पत्यौ जीवति या तु स्त्री उपवासव्रतं चरेत् ।
आयुष्यं हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति ।।[1]

जो स्त्री पति के जीवित रहने पर भूखा मरना रूप व्रत या उपवास करती है, वह पति की आयु को कम करती है और मरने पर स्वयं नरक को जाती है ।[2]

इस प्रकार भूखा मरनेवाले व्रत का सभी सन्त, ऋषि-मुनियों ने खण्डन किया है । आयुर्वेद की दृष्टि से भी आज जिस रूप में इन व्रतों को किया जाता है, उस रूप में ये व्रत शरीर को हानि पहुँचाते हैं । आज के व्रत कैसे हैं, लीजिए, सुनिए ।

एक माता ने एकादशी का व्रत रखा । इस माता के चार पुत्र थे । पुत्रों ने सोचा कि माता ने व्रत किया है उसे कुछ खाने के लिए भेजना चाहिए । सबसे बड़े लड़के ने एक किलो रबड़ी भेज

---

१. मनुस्मृति में से अनेक श्लोकों को निकाला गया है । अनेक श्लोक पीछे से मिलाये गये हैं । यह श्लोक पाँचवें अध्याय में १५५ श्लोक के पश्चात् था । अब भी अनेक संस्करणों में यह श्लोक है । कुछ संस्करणों में निकाल दिया गया है ।

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं—
"भला गर्भवती वा सद्योविवाहिता स्त्री, लड़के या युवा पुरुषों को तो कभी उपवास न करना चाहिए। परन्तु किसीको करना भी हो तो जिस दिन अजीर्ण हो, क्षुधा न लगे, उस दिन शर्करावत् शर्बत या दूध पीकर रहना चाहिए । जो भूख में नहीं खाते और बिना भूख के भोजन करते हैं, दोनों रोगसागर में गोते खा दुःख पाते हैं ।"
—सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास

CamScanner से स्कैन किया गया

दी, दूसरे ने एक किलो कलाकन्द भेजा, तीसरे ने दो दर्जन पके हुए चित्तीदार केले भेजे, चौथे ने एक किलो सिंघाड़े का हलवा भेजा। सायंकाल चारों पुत्र घर आये। बड़े लड़के ने पूछा—"माताजी मैंने आपके व्रत के लिए एक किलो रबड़ी भेजी थी, कैसी थी?" माता ने कहा—"बेटे! वह मैंने प्रातः आठ बजे खा ली थी, बहुत स्वादिष्ट थी।" दूसरे लड़के ने कहा—"माँ! मैंने एक किलो कलाकन्द भेजा था।" माता ने कहा—"पुत्र! वह मैंने ग्यारह बजे खा लिया था, बहुत अच्छा था।" तीसरे लड़के ने कहा—"माताजी! मैंने आपको दो दर्जन केले भेजे थे, मिले होंगे।" माता ने कहा—"वत्स! वे सारे मैंने दो बजे खा लिये थे, बहुत पके हुए एवं मीठे थे।" चौथे लड़के ने कहा—"माँ! मैंने एक किलो सिंघाड़े का हलवा भेजा था।" माता बोली—"बेटे! तेरा हलवा तो सबसे बढ़िया था, वह मैंने चार बजे खा लिया था।" सबसे छोटा लड़का छत पर चढ़ गया और चिल्लाकर बोला—"भाई पड़ौसी लोगो! आज हमारी माता ने व्रत रखा है, अतः आप अपने-अपने बच्चों को छिपाकर रखना।"

व्रत के बहाने हर समय मुंह में कुछ-न-कुछ ठूँसते जाने का नाम व्रत नहीं है। मैं व्रतों का खण्डन नहीं करता, आर्यसमाज भी व्रतों का खण्डन नहीं करता। आप एकादशी का व्रत कीजिए और खूब कीजिए। परन्तु एकादशी क्या है, इसे समझ लीजिए। पाँच ज्ञानेन्द्रिय और पाँच कर्मेन्द्रिय तथा एक मन—ये ग्यारह हैं। इन सबको अपने वश में रखना, आँखों से शुभ देखना, कानों से शुभ सुनना, नासिका से ओ३म् का जप करना, वाणी से मधुर बोलना, जिह्वा से शरीर को बल और शक्ति देनेवाले पदार्थों का ही सेवन करना, हाथों से उत्तम कर्म करना, पाँवों से उत्तम सत्संग में जाना, जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन करना—यह है सच्चा एकादशी-व्रत। इस व्रत के करने से आपके

CamScanner से स्कैन किया गया

जीवन का कल्याण हो जाएगा। शरीर के गलाने और सुखाने से तो यह लोक भी बर्बाद हो जाएगा, मुक्ति मिलना तो दूर की बात है।

सत्यनारायणव्रत का अर्थ है कि मनुष्य अपने हृदय में विद्यमान सत्यस्वरूप परमात्मा के गुणों को अपने जीवन में धारण करे। जीवन में सत्यवादी बने। मन, वचन और कर्म से सत्य का पालन करे।

नारदजी का तीसरा प्रश्न था—**कृतं केनैव तद्व्रतम्।** पहले इस व्रत का अनुष्ठान किस-किसने किया था ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए विष्णुजी कहते हैं कि पहले यह व्रत सदानन्द ब्राह्मण, काष्ठ-विक्रेता—लकड़हारे, लीलावती-कलावती अथवा साधु बनिया और तुंगध्वज राजा ने किया था।

सदानन्द ब्राह्मण पूर्वजन्म के पापों के कारण दुःखी था। सत्य के व्रत और आचरण से वह सुखी हुआ। इस कथा में मनुष्यमात्र के लिए यह सन्देश है कि भीख माँगे हुए में से भी धर्म का काम मत छोड़ो। पाण्डव भिक्षा में से भी बलिवैश्वदेव यज्ञ करते थे। अपने अड़ौसी-पड़ौसियों को भी देते थे। हम भी महर्षि मनु के इस सन्देश को सदा ध्यान में रखें—

ब्रह्मयज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्॥ —मनु० ४। २१

ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ और पितृयज्ञ का यथाशक्ति त्याग न करें।

CamScanner से स्कैन किया गया

काष्ठविक्रेता=लकड़हारा शूद्रवर्ण का प्रतिनिधि है। वह उद्यम से धनोपार्जन करता था। उसने सत्यव्रत की शिक्षा सदानन्द ब्राह्मण से पाई। अपने व्यवसाय में सत्य का पालन करने से उसके पास किसी वस्तु की कमी नहीं रही। आज सभी व्यापारी यदि लकड़हारे की भाँति अपने-अपने व्यवसाय में सत्य, न्याय, धर्म और ईमानदारी का व्यवहार करने लगें तो समाज, देश, राष्ट्र और विश्व की कायापलट होकर सभी का कल्याण हो जाए। इस कथा से दूसरी शिक्षा यह मिलती है कि यदि व्यापार से अधिक धन की प्राप्ति हो तो उसे धर्म के कार्यों में लगाओ, यज्ञ करो, दान दो।

साधु बनिया वैश्यवर्ण का प्रतिनिधि है। संसार के सब मोहों में धन का मोह सर्वोपरि है। धन का मोह मनुष्य से नाना प्रकार के पापकर्म करा डालता है।[1]

वित्त=धन के मोह से मूढ़ मनुष्य धर्म-कर्म सब-कुछ भूल जाता है। आज सर्वत्र अर्थ का बोलबाला है। डालर की पूजा ने ईश्वर को भी धता बता दी है। सूतजी ने भी धन के प्रलोभनों का सूक्ष्म विवेचन किया है। साधु वैश्य सत्य का संकल्प कर उसे बार-बार तोड़ता है। जब साधु वैश्य राजा चन्द्रकेतु के रत्नसार पुर में व्यापार के लिए गया तो मानो सत्यरूपी विष्णु ने शाप दिया—"हे वैश्य! तुम बार-बार अपनी प्रतिज्ञा से भ्रष्ट हुए हो, इसलिए तुम्हें अत्यन्त दारुण दुःख भोगना पड़ेगा।"

---

१. किसी कवि ने कहा है—

> यह लालच इज्जत खोता है, नहीं इज्जत लालच मारे की।
> यह लोभ चमक खो देता है, हर एक चमकते तारे की॥

CamScanner से स्कैन किया गया

वित्तमोह में मत्त वैश्य को पाठ पढ़ाने के लिए नियति का उलटा चक्र चलने लगा। उसे चोरी न करने पर भी चोरों का दण्ड भोगना पड़ा। घर पर लीलावती और कलावती का सारा धन चोर चुरा कर ले गये। बुरे-से-बुरा कष्ट भोगने के पश्चात् भाग्यचक्र ने पलटा खाया, मायापति की माया पुनः अनुकूल हुई। साधु वैश्य और उसका जामाता मुक्त कर दिये गये और ये दोनों अपने नगर को लौट पड़े। मार्ग में एक दण्डी स्वामी ने दर्शन देकर पूछा—"हे साधो! तुम्हारी नौका में क्या है?" इस प्रश्न को सुनकर साधु जी के तो मानो प्राण ही निकल गये। इतने कष्ट और दुःख भोगने के पश्चात् भी धन का मोह नहीं छूटा। साधु ने कहा—"महाराज! क्या रुपया लूटने की इच्छा है? यहाँ कुछ नहीं है। नाव में तो केवल घास-फूँस भरा हुआ है।" इस निष्ठुर वचन को सुनकर दण्डी स्वामी ने शान्त-भाव से कहा—"तुम्हारी बात सत्य हो।"

दण्डी स्वामी के जाने के पश्चात् साधु वैश्य ने देखा कि नौका में विद्यमान धन गायब है। साधु वैश्य समझ गया कि यह सब दण्डी स्वामी की करामात है, अतः दुःखी होकर वह दण्डी स्वामी की तलाश में दौड़ा। अपने असत्य पर पछताकर उसने दण्डी स्वामी की बहुत अनुनय-विनय की। दण्डी स्वामी ने पहले तो उसे खूब डाँटा और फटकारा परन्तु बाद में उसका खोया हुआ धन फिर वैसा ही कर दिया।

वस्तुतः धन कहीं गया नहीं था, केवल साधु की दृष्टि में फेर था। सत्य से पराङ्मुख होकर वह दान के नाम से अपनी लाखों की सम्पत्ति को लता-पत्र समझता था तो वह लता-पत्र के समान ही थी। सत्ययुक्त होकर वह उसे ठीक समझने लगा तो वह पहले जैसी हो गई। सत्यनारायण-व्रत-कथा साधु वैश्य के दृष्टान्त से उद्बोधन देती है कि भवसागर में जीवन-नैया डाले हुए कोई भी

CamScanner से स्कैन किया गया

मनुष्य यह कहने की भूल न करे कि मेरी नाव में केवल घास-फूंस ही है। याचक को तो देना ही चाहिए। वेद कहता है—**न तदको अस्ति**॥ (ऋ० १०।११७।४) जहाँ याचक को दान नहीं दिया जाता, जहाँ से याचक निराश लौट जाता है, वह घर घर नहीं है। इस कथा के द्वारा कथाकार ने यह भी सन्देश दिया है कि "शुभस्य शीघ्रम्"—शुभ कार्य को जल्दी कर डालना चाहिए। आज-कल करते हुए टालते नहीं रहना चाहिए। इस कथा का यह भी उद्घोष है कि घर में दैनिक यज्ञ होना चाहिए। यदि किसी कारणवश दैनिक यज्ञ न कर सकें तो पक्षयाग=अमावस्या एवं पौर्णमास तथा पर्वों पर तो अवश्य ही यज्ञ करें।

तुंगध्वज राजा क्षत्रिय वर्ण का प्रतिनिधि है। तुंगध्वज राजा ने गोपों के प्रसाद का परित्याग मिथ्याभिमान के वशीभूत होकर किया। राजा के लिए इससे बढ़कर अपराध की कल्पना नहीं हो सकती कि वह अपने को ऊँचा और प्रजा को नीच समझकर उसके साथ मिलने में भी अपनी हेठी समझे। यह सत्य का घोर अपमान है। राजनीति में सत्य यह है कि राजा अपने राष्ट्र के साथ तन्मय हो और राष्ट्र के हितों को अपना हित समझता हो। ऊँच-नीच के अभिमान के कारण तुंगध्वज राजा की राष्ट्र के साथ एकता नहीं हुई, यही उसके जीवन का भारी असत्य था। दर्परूप असत्य ने तुंगध्वज के धन-धान्यादि का विनाश कर दिया। अन्त में जब वह मन के मैल को धोकर स्वच्छन्द भाव से गोपों से मिला तब 'सत्यसन्ध' राजा बन गया।

इस प्रकार यह कथा सभी वर्णों को सत्य पर दृढ़ रहने का उपदेश एवं सन्देश देती है। हम अपने जीवन में सत्य को अपनाएँ। आओ हम प्रभु से प्रार्थना करें—

असतो मा सद्गमय। —शतपथ १४।४।१।३०

CamScanner से स्कैन किया गया

आचार्य धर्मवीर आर्य
आर्य वीरदल गुरु...

प्रभो मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चल।

इस कथा फल बताते हुए सूतजी कहते हैं—

य इदं कुरुते सत्यव्रतं परमदुर्लभम्।
धन-धान्यादिकं तस्य भवेत् सत्यप्रसादतः॥

जो मनुष्य सत्यनारायण परमात्मा के सत्यरूपी परम दुर्लभ व्रत का अनुष्ठान करता है, सत्यस्वरूप **प्रभ** की कृपा से वह धन-धान्यादि सब-कुछ प्राप्त कर लेता है।

नारदजी का अन्तिम प्रश्न था—**"कदा कार्यं व्रतं प्रभो ?"** यह व्रत कब करना चाहिए ?

विष्णु ने कहा—

यस्मिन् कस्मिन् दिने कार्यं श्रद्धाभक्तिसमन्वितः॥

यह व्रत श्रद्धा और भक्तिपूर्वक किसी भी दिन किया जा सकता है।

परमात्मा के बनाए सभी दिन शुभ हैं। सोमवार अच्छा है और मंगलवार बुरा, यह सब मनुष्यों की कपोल-कल्पना है। आकाश के नक्षत्र हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। **वृद्ध चाणक्य** ने कहा है—

नक्षत्रमति पृच्छन्तं बालमर्थोऽतिवर्तते।
अर्थो ह्यर्थस्य नक्षत्रं किं करिष्यन्ति तारकाः॥ (कौ० अ० ९।४।३७)

जो मूर्ख कार्यसाधन के समय नक्षत्रों के शुभाशुभ का विचार करता है, उसके स्वार्थ नष्ट हो जाते हैं। धन कमाने का नक्षत्र=साधन तो धन ही है। बेचारे आकाश के नक्षत्र क्या कर सकते हैं ?

॥ इति सत्यनारायणव्रत-कथा ॥

CamScanner से स्कैन किया गया

लेखक के अन्य ग्रन्थ

वाल्मीकि रामायण	३५.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	अप्राप्य
आदर्श परिवार	६.००
शिव-संकल्प	४.००
वेद-सौरभ (वृहद्)	४.००
(लघु)	१.००
वैदिक उदात्त भावनाएँ	३.००
वैदिक प्रश्नोत्तरी	३.००
कुछ करो कुछ बनो	३.००
मर्यादापुरुषोत्तम राम	३.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	३.००
ब्रह्मचर्य-गौरव	३.००
घरेलू ओषधियाँ	२.५०
वाल सत्यार्थप्रकाश	२.५०
स्वर्ण-पथ	१.५०
वैदिक विवाह-पद्धति	२.००
अमर सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द	२.००
भूमिका-प्रकाश	१.२५
ईशोपनिषद्	अप्राप्य
प्रार्थना-प्रकाश	,,
प्रभात-वन्दन	,,
विद्यार्थी लेखावली	,,
दिव्य-दयानन्द	अप्राप्य
हास्य-विनोद	,,
नीति-दोहावली	,,
भर्तृहरिशतकम्	,,
भारत की अवनति के सात कारण	०.६०
स्वामी दयानन्द जीवन-चरित	६.००
भगवान् कृष्ण	०.६०
स्वास्थ्य का महान् शत्रु अण्डा	०.१५
गीता-उपदेश (सत्तर श्लोकी गीता)	अप्राप्य
वैदिक सूक्तिसुधा	,,
विष्णु-पुराण की आलोचना	,,
प्रार्थना-लोक	,,
स्वर्ण-सिद्धान्त	०.३५
शिखा-सूत्र	०.४०
जीवन-यात्रा (पं० बुद्धदेव मीरपुरी की जीवनी)	अप्राप्य
स्वामी वेदानन्द	,,
ऋग्वेद शतकम्	२.००
यजुर्वेद शतकम्	२.००
सामवेद शतकम्	२.००
अथर्ववेद शतकम्	२.००
चतुर्वेदशतकम् (सजिल्द)	८.००
श्रीसत्यनारायणव्रत-कथा	०.५०

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रकाशक :
भगवती प्रकाशन
माडल टाउन,
दिल्ली-११०००६

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, १९७६
[श्रद्धानन्द-बलिदान अर्ध-शताब्दी]

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मूल्य : ५० पैसे

मुद्रक :
अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-११००३२

प्राप्ति-स्थान :
गोविन्दराम हासानन्द
वैदिक साहित्य के प्रमुख प्रकाशक तथा विक्रेता
४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

आर्य प्रकाशन
८१४, कुंडेवालान, अजमेरी गेट
दिल्ली-११०००६

मधुर प्रकाशन
आर्यसमाज बाजार सीताराम,
दिल्ली-११०००६

सर्वसखा प्रकाशन
२०३४, बाजार सीताराम,
दिल्ली-११०००६

CamScanner से स्कैन किया गया